जनवरी से जून माह में पशुओं की देखभाल

1. जनवरी पौष
2. फरवरी माघ
3. मार्च फाल्गुन
4. अप्रैल चैत्र
5. मई बैसाख
6. जून ज्येष्ठ

जनवरी पौष

- पशुओं को शीत लहर (सर्दी) से बचाएं ।
- खुरपका मुंहपका का टीका अवश्य लगाएं
- बाँझ संतति का विशेष ध्यान रखें।
- नवजात पशुओं का विशेष ध्यान रखें।
- वाह्य परजीवी से बचाव के लिए दवा से नहलाएं
- दुहान से पहले आयन को धो लें।

फरवरी माघ

- खुरपका मुंहपका का टीका अवय लगाये।
- जिन पशुओं में जुलाई अगस्त में टीका लग चूका है उन्हें पुनः लगवाएं।
- बाह्य परजीवी तथा अन्तः परजीवी रोगों की दवा लगायें।
- त्रिम गर्भाधान कराएं
- बांझपन चिकित्सका एवं गर्भ परीक्षण कराएं
- बरसीम का बीज तैयार करें।
- पशुओं को ठण्ड से बचाने का प्रबंध करें।

मार्च फाल्गुन

- पशुशाला की साफ सफाई तथा पुताई कराएँ
- बधियाकरण कराएं
- खेत में सूडान चरी तथा लोविया की बुआई करें
- मौसम में परिवर्तन से पशु का बचाव करें।

अप्रैल चैत्र

- खुरपका मुंहपका रोग से बचाव का टीका लगवाएं
- जायद के हरे चारे की युवाई करें, बरसीम चारा बीज उत्पाद हेतु कटाई कार्य करें।
- अधिक आय के लिए स्वच्छ दुग्ध उत्पादन करें
- अन्तः एवं बाह्य परजीवी का बचाव द्वापान से करें।

मई बैसाख

- गलघोटू तथा लगड़िया बुखार का टीका सभी पशुओं में लगवाएं
- पशुओं को हरा चारा पर्याप्त मात्रा में खिलाएं ।
- पशु का स्वच्छ पानी पिलवाएं
- पशु को सुबह एवं सायं नहलाएं
- पशु को लू एवं गर्मी से बचाने को व्यवस्था करें।
- पशुओं में परजीवी का उपचार कराएं।
- बांझपन की चिकित्सा करवाएं तथा गर्भ परिक्षण कराएँ ।
- परजीवी पशुओं को नमक नमक का सेवन कराएं।

जून ज्येष्ठ

- गलघोटू तथा लगड़िया बुखार का टीका सभी पशुओं में लगवाएं
- पशु को लू से बचाएं
- हरा चारा पर्याप्त मात्रा में दें।
- परजीवी की दवा पशुओं को पिलावें
- खरीफ के चारे मक्का लोबिया के ली खेत की तैयारी करें।
- बाँझ पशु का उपचार कराए।
- सूखे खेत को चरी न खिलाएं अन्यथा जहर फैलने का डर रहेगा।

लेखन : हंसराम मीणा

स्त्रोत: कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग, भारत सरकार